"स्पंदन"

समाचार - पत्रिका

राजस्थान महिला कल्याण मण्डल संस्था, चाचियावास (अजमेर) का त्रैमासिक समाचार पत्र
(सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1958 के अन्तर्गत पंजीकृत संस्था पंजीयन सं. 19/ए.जे.एम./87-88)

केवल निजी वितरण हेतु | संयुक्त अंक (24-25) वर्ष (6) | मार्च से अगस्त 2014

विद्यालय या स्कूल एक ऐसा स्थान है जो मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा और गिरजाघर से भी ज्यादा पावन है क्योंकि यही वो स्थान है जो बालक को सही/गलत का निर्णय लेना है, स्वयं के लिए और दूसरों के विकास एवं परोपकार का ज्ञान करवाता है। राष्ट्रपिता महात्मागांधी ने शिक्षा को व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक पूर्णता कहा है तो स्वामी दयानन्द सरस्वती ने व्यक्ति के नैतिक आचरण को शिक्षा माना है जिससे वह स्वयं के साथ-साथ अपने आस-पास के वातारण का भी विकास कर सकें।

वैसे तो व्यक्ति कर पल एवं हर स्थान पर सीखता है तथा शिक्षा ग्रहण करता है। लेकिन विद्यालय शिक्षा प्राप्ति एवं इसके प्रसार की महत्वपूर्ण स्थल है। वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य सीमित व अस्पष्ट होने के कारण विद्यालयों की गुणवता पर प्रश्न उठ रहे है।

अतः हम स्पन्दन के इस अंक में दिगन्तर, जयपुर के आलेख ''विद्यालय की धारणा'' को पढ़कर इसके विभिन्न घटकों को जानने की कोशिश करेंगे ताकि शिक्षा के प्रसार एवं विकास के प्रयासों में हम अपना योगदान भी दे सके।

-राकेश कुमार कौशिक

सम्पादक मण्डल

मुख्य सम्पादक : राकेश कुमार कौशिक

: सम्पादन समिति :

क्षमा आर. कौशिक, तरुण शर्मा, नानूलाल प्रजापति, पद्मा चौहान, लक्ष्मणसिंह चौहान

लिखते रहिए

आपके सुझावों एवं फीड बैक का हमेशा इंतजार रहता है, अतः कृपया लिखते रहिए

''विद्यालय की धारणा'' में पहली बात तो एक गंभीर और व्यवस्थित शुरूआत करने की है। यह शुरूआत बच्चे को एक बौद्धिक, कल्पनाशील, नैतिक एवं भावनात्मक विरासत में दीक्षित करने की शुरूआत है, उन बच्चों के लिए जो इस दिशा के लिए तैयार हैं। विद्यालय जाने से पहले भी बच्चा सीखता रहता है। यह सीखना अनायास ही समझ की रोशनी के टुकड़े मिल जाने जैसा है। ये अन-खोजे ज्ञान की प्राप्ति के क्षण होते हैं। बिना पूछे प्रश्नों के अधूरे समझे उत्तर होते हैं। विद्यालय की धारणा में निहित है एक सुविचारित शिक्षाक्रम, जो विद्यालय पूर्व की समझ पर अध्यारोपित (सुपर इम्पोज्ड) होता है। यह सुविचारित शिक्षाक्रम शिक्षार्थी के विचारों को दिशा देता है, नियंत्रित करता है, उसके ध्यान एवं प्रयासों को केन्द्रित करता है और शिक्षार्थी को चीजों को देखने के लिए, अलग-अलग पहचानने के लिए प्रोत्साहित करता है। 'विद्यालय की धारणा' इस बात की स्वीकारोक्ति है कि शिक्षा में पहली और सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह समझना है कि 'सीखना' कोई 'सीवन-विहीन चोगा' नहीं है, कि संभावनाये अनन्त नहीं है।

दूसरी बात, विद्यालय माने है अध्यवसाय के द्वारा सीखने में लगना। यह मुश्किल काम है, क्योंकि इसके लिए प्रयत्न करना होता है। खेल-खेल में किये जाने वाले कामों को तो तात्कालिक संतुष्टि न मिलने पर तुरंत छोड़

दिया जाता है, पर यहां सीखने में प्रयासरत रहने की जरूरत पड़ती है, जो सीखा जाता है उसे समझना भी पड़ता है और याद भी रखना पड़ता है। यही अध्यवसाय, यही तात्कालिक ढुल-मुल झुकावों के विपरीत अनुशासन, सजगता से ध्यान लगाने और उसे केन्द्रित रखने की अत्यावश्यक आदत को विकसित करता है। यही अध्यवसाय धैर्य सिखाता है। सूक्ष्म और सटीक पर ध्यान देना सिखाता है साहस और बौद्धिक ईमानदारी सिखाता है। इसी अध्यवसाय से शिक्षार्थी यह समझ पाता है कि कठिनाइयों से बचकर निकलने से काम नहीं चलेगा, उन पर पार पाना होगा। उदाहरण के लिए, हमारी विपुल और पेचीदा सभ्यता को ही लें। इस सभ्यता में मानवीय समझ, चिंतन के तरीके, भावना एवं कल्पनाशीलता, आदि सभी क्षेत्रों में हमारी विरासत (पूर्व पीढ़ियों द्वारा संचित ज्ञान) से परिचय अधिकतर पुस्तकों और इन्सानों के कथनों के माध्यम से ही होता है। पर पढ़ना और सुनना-सीखना तो एक श्रमसाध्य काम है और सूचना के टुकड़े प्राप्त करने से इसका कोई विशेष संबंध नहीं है।

पढ़ना और सुनना तो विवेकशील चेतना की सायास अभिव्यक्ति को ग्रहण करना है, समझना है, उसका पुनः चिंतन है। यह तो भाव के सूक्ष्म भेद की पहचान करना सीखना है, और वह भी बिना डीकोडिंग (decoding) के पागलपन में गर्त हुए। यह तो दूसरे के विचारों को अपने दिमाग में अभिनीत होने की छूट देना है। इस तरह पढ़ने में वे विचार हमारे अपने 'आप' का, हमारी समझ का, हमारी अपने बारे में समझ का ही एक हिस्सा बन जाते हैं। तो फिर पढ़ना सीखना है : सतत् चकित चेतना का अपनी इस नई बनती जा रही छवि को समर्पण करना सीखना, इस छवि को समझना सीखना और इस छवि को रिस्पोण्ड (respond) करना सीखना। और 'पढ़ना' तो लगन से पढ़कर ही सीखा जा सकता है। उन रचनाओं को पढ़कर जो हमारी तात्काकिल चिंताओं से दूर की हों। तात्कालिक चिंताओं पर लेखन को पढ़कर 'पढ़ना' सीखना लगभग असंभव है।

विद्यालय की धारणा का तीसरा पहलू है 'तत्क्षणिकता' से दूरी। स्थानीय संसार, उसके तत्क्षणिक सरोकारों और उस दिशा से फासला जहां वह ध्यान खींचना चाहता है। और 'स्कोल' (schol) शब्द का यही वास्तविक अर्थ है, न कि 'आराम' और 'खेल' (जैसा कुछ लोग कहना चाहते हैं)। विद्यालय वह विशेष स्थान है जहां नये वारिस का अपनी नैतिक और बौद्धिक विरासत से परिचय होता है। परिचय इस विरासत के उस रूप से नहीं जो बाहर की दूनिया के कार्यव्यापार में बरता जा रहा है। (रोजमर्रा के कामों में इस विरासत का बड़ा हिस्सा स्मृति से ओझल रहता है, संक्षिप्त और सरलीकृत किया जाता है। यहां तो यह विरासत केवल टुकड़ों में प्रस्तुत होती है, तात्कालिक उपक्रमों में निवेश के लिए।) पर विद्यालय में इस थाति से परिचय इसकी पूर्णता में, इसके निर्बाध रूप से होता है। इसके अपरिसीमित रूप से परिचय होता है। विद्यालय में शिक्षार्थी की अनुप्रेरणा अपने साथ लाये अव्यवस्थित रुझान नहीं बनते, बल्कि वहां वह उन नव-परिचित

उत्कृष्टताओं और अभिलाषाओं से अनुप्रेरित होता है जो अभी तक उसके सपने में भी नहीं थीं। यहां उसका सामना जिन्दगी के मिलावटी सवालों के पक्षपातपूर्ण उत्तरों से नहीं बल्कि ऐसे प्रश्नों से होता है जो उसके जेहन में पहले कभी नहीं आये होते। विद्यालय में उसे नयी अभिरूचियां मिल सकती हैं और उनमें श्रेष्ठता प्राप्त करने के अवसर मिल सकते हैं, बिना तत्काल परिणाम प्राप्ति की अनिवार्यता से विकृत हुए यहां वह नई दिशाओं में सन्तुष्टि खोजना सीख सकता है, जिन दिशाओं का अभी तक उसे भान भी न था।

उदाहरण के लिए इस मानवीय विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भाषायें है, और विशेष रूप से नये प्रवेशार्थी की मातृभाषा है। अपनी मातृभाषा के प्रचलित रूप को और अपने जैसे अन्य लोगों से संप्रेषण के माध्यम के रूप में इसे वह पहले ही सीख चुका है। पर विद्यालय में वह इससे कुछ अधिक सीखता है, जो इससे कुछ भिन्न भी होता है। विद्यालय में भाषा अध्ययन का अर्थ है शब्दों को विचार की प्रभाविता के उपकरण के रूप में देखना, और अधिक स्पष्ट और सटीक तरीके से सोचना सीखना, स्वयं भाषा के संसाधनों को समझ की अभिव्यक्ति के रूप में देखना सीखना। क्योंकि भाषा को केवल वर्तमान संप्रेषण के साधन के रूप में देखना तो वैसा ही है जैसे कोई वारिस विरासत में मिले अपने उस महल को जो मानवीय ज्ञान, भावनाओं, सपनों और अभिलाषाओं से भरा पूरा हो, मात्र सर छुपाने की जगह के रूप में देखता हो । संक्षेप में विद्यालय अलग एवं फासले पर एक 'आश्रम' की तरह है जहां उत्कृष्टता का संगीत सुना जा सकता है, क्योंकि सांसारिक प्रमाद और पक्षपात को यहां चुप करा दिया जाता है। या उसे मंद कर दिया जाता है।

अगली बात विद्यालय की धारणा में निहित है, शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच व्यक्तिगत हस्तान्तरण विद्यालय का एक मात्र अपरिहार्य उपरकरण शिक्षक ही है। विभिन्न प्रकार के उपकरणों पर वर्तमान-कालीन बल लगभग पूरी तरह से विद्यालयनाशी है। शिक्षक वह है जिसमें मानवीय विरासत का कोई हिस्सा या पहलू जीवंत है। उसके पास हस्तान्तरण के लिए कुछ ऐसी चीज है जिस में वह पारंगत है (''अज्ञानी शिक्षक अन्तरविरोधयुक्त विचार है)। और साथ ही शिक्षक वह है जिसने यह भी सोचा है कि उस चीज के हस्तान्तरण का बेहतरीन तरीका क्या है, और यह हस्तान्तरण किसी ऐसे शिक्षार्थी को किया जाता है जिसे शिक्षक जानता है। शिक्षक स्वयं किसी ऐसी परंपरा या कल का रक्षक है जिस में मानवीय समझ वास करती है, जीवन्त है, और नव-शिक्षार्थीयों को हस्तान्तरित करने में सतत् रूप से नव-सृजित होती रहती है। 'पढ़ाने' का अर्थ है कि कुछ महत्वपूर्ण जो शिक्षक सिखना चाहता था, किसी तरह से शिक्षार्थी ने ग्रहण किया है, समझा है, स्मरण किया है। अतः 'शिक्षण' एक वैविध्यपूर्ण कर्म है जिसमें कई गतिविधियां समाहित हो सकती हैं, जैसे इंगित करना, सुझाना, प्रेरित करना, फुसलाना, प्रोत्साहित करना, निर्देशित करना, चिन्हित करना, वार्तालाप, आदेश देना, सूचना देना, वर्णन करना, व्याख्यान देना, प्रदर्शन, अभ्यास, जांचना, परीक्षा लेना, आलोचना करना,

संशोधन करना आदि-आदि; वास्तव में वह सब कुछ जो समझ के विकास में बाधक न हो। इसी तरह (सीखना) भी विविधि रूपों में हो सकता है ; देखने में, सुनने में, पढ़ने में, सुझाव ग्रहण करने में, निर्देशन को मानने में, याद करने में, प्रश्न करने में, विमर्श में, प्रयोग में, अभ्यास में, आदि-आदि। वह सब कुछ जो चिंतन और समझने के प्रयास में बाधक न हो, सहायक हो।

अन्त में विद्यालय की धारणा शिक्षकों और शिक्षार्थियों के एक समुदाय की धारणा है; जो न बहुत छोटा है न बहुत बड़ा। जिसकी अपनी परम्परायें होती हैं; जो निष्ठा प्रेम और आदर की भावनायें जगाता है। एक ऐसा समुदाय जो नवागंतुकों को मानव होने की महानताओं में और मानव होने के बंधनों में दीक्षित करने के लिये समर्पित है। विद्यालय वह अलमा मतेर (पोषक माँ) है जो अपने बच्चों को गर्व और स्नेह से याद करती है और कृतज्ञता के साथ बच्चों द्वारा याद की जाती है। अच्छे विद्यालय की पहचान होती है कि वहां सीखना स्वयं ही अपने ध्येय के रूप में, परम संतोष प्राप्ति के रूप में देखा जाता है, वहां सीखने को ग्राह्य बनाने के लिये किसी बाहरी मुलम्मे की जरूरत नहीं होती है। अच्छे विद्यालय की यह पहचान होती है कि वह अपने छात्रों को एक स्मरणीय बचपन का तोहफा देता है। ऐसा बचपन नहीं जो शीघ्रता से पार कर गये, किसी अधिक लाभकारी उपक्रम में लगने के लिए। बल्कि ऐसा बचपन जो कृतज्ञता के साथ याद किया जाये। ऐसा बचपन जो मानवीय अवस्था के रहस्यों में दीक्षित होने के आनन्द से परिपूर्ण काल के रूप में याद किया जाये। और ये मानवीय अवस्थायें है आत्मबोध, बौद्धिक दृष्टि से संतोषप्रद अस्मिता तथा नैतिक दृष्टि से संतोषप्रद अस्मिता।

अतः पीढ़ियों के बीच इस विनिमय का कोई बाहरी 'उद्देश्य' या 'प्रयोजन' नहीं हो सकता शिक्षक के लिए यह उसके 'इन्सान होने' के उपक्रम का हिस्सा है, और शिक्षार्थी के लिए यह उसके 'इन्सान बनने' के उपक्रम का हिस्सा है। इस प्रयास में नये आने वाले को कोई विशिष्ट योग्यता से सज्जित नहीं किया जाता। न ही उसे कोई विशिष्ट दक्षता सिखाई जाती है। इससे उसे अन्य लोगों की तुलना में कोई विशिष्ट भौतिक लाभ मिलने का रास्ता भी नहीं खुलता। और न ही इस पूरे उपक्रम का इशारा किसी अंतिम तौर पर 'पूर्ण मानव-चरित्र' की तरफ है। इस पीढ़ियों के हस्तांतरण में भागीदार होने वाला हर व्यक्ति मानवीय समझ की विरासत का कोई एक छोटा या बड़ा हिस्सा अपने संरक्षण में ले लेता है। यही वह दर्पण होता है जिसके सामने वह मानव-जीवन के अपने स्वरचित संस्करण को चरितार्थ करता है। शिक्षा का आशय यह या वह दक्षता बेहतर सीखना नहीं है, बल्कि मानवीय अवस्था की समझ है जिसमें जीवित होने का प्राकृतिक तथ्य सतत् रूप से 'वांछनीय जीवन' की छवि से प्रकाशित होता रहे। शिक्षा का आशय यह सीखना है कि कैसे एक ही साथ स्वायत्त और मानव जीवन का सभ्य समर्थक बना जाये।

स्रोत : यह पाठ माइकल ऑकशट के लम्बे लेख Education the engagement and its frustrations के एक अंश का अनुवाद है – साभार – दिगन्तर आलेख हिन्दी प्रस्तुति : रोहित धनकर –"विद्यालय की धारणा"

सुर्खियां – मार्च 2014 से अगस्त 2014

❍ 6 मार्च 2014 को (कनाड़ा) क्रीसेन्ट स्कूल से आये बच्चों का स्वागत किया और मीनू मनोविकास मंदिर इन्क्लूसिव स्कूल का अवलोकन किया एवं विद्यालय में बच्चों के लिए सेन्सरी पार्क बनाया।

❍ 13 मार्च 2014 मीनू मनोविकास मंदिर इन्क्लूसिव स्कूल में होली का त्यौहार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। संस्था के

अधिशाषी सचिव श्रीमान् सागरमल कौशिक ने होली का पूजन किया एवं उसका दहन किया। इससे पूर्व प्रार्थना सत्र के दौरान बच्चों को अध्यापक भरत शर्मा द्वारा होली के त्यौहार की

जानकारी दी गई एवं होली खेलते समय रंगों से रखी जाने वाली सावधानियों के बारे में बताया गया। इस अवसर पर बच्चों के लिए ड्रॉईग प्रतियोगिता एवं मेहन्दी प्रतियोगिता आयोजित की गई। वोकेशनल यूनिट के बच्चों द्वारा होलिका निर्माण किया गया एवं रंगोली सजाई।

❍ 5 अप्रैल 2014 मीनू मनोविकास मंदिर इन्क्लूसिव स्कूल द्वारा छात्र–छात्राओं ने शैक्षणिक भ्रमण के अन्तर्गत जयपुर रोड़ अजमेर

स्थित स्वाद री ढाणी, का लुप्त उठाया। संस्था के अधिशाषी सचिव श्री सागरमल कौशिक ने हरी झण्डी दिखाकर शैक्षणिक भ्रमण की बस को रवाना किया। बच्चों ने स्वाद री ढाणी में राजस्थानी ग्रामीण सभ्यता, वेशभूषा, रहन–सहन, नृत्य एवं चित्रकारी का अवलोकन किया। बच्चों के मनोरंजन के लिए स्वाद री ढाणी के लोक कलाकारों के द्वारा कठपुतली नृत्य, जादू (हाथ की सफाई) के कारनामे दिखाए गए।

❍19 अप्रैल को विद्यालय परिसर में अभिभावक बैठक का आयोजन किया गया इस बैठक में बच्चों की त्रैमासिक शैक्षिक प्रगति आगामी लक्ष्य सृजनात्मक कौशल, व्यवसायिक क्षेत्र आदि

पर चर्चा को लेकर अभिनावक से बातचीत की गई।

इस बैठक में बच्चों के साथ बेहत्तर कार्य करने के लिये विचार व सुझाव की चर्चा की गई।

❍27 अप्रेल 2014 : राजस्थान महिला कल्याण मण्डल संस्था, चाचियावास में रोटरी इन्टरनेशनल (फाउडेशन) एवं रोटरी

क्लब, अजमेर के तत्वाधान से दक्ष व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र हेतु दी गई 1,10,000 रूपये की विभिन्न मशीनरी (जिक्शो, रन्दा एवं कटिंग नशीन) का लोकार्पण रोटरी क्लब अजमेर के संरक्षक रोटेरियन श्री ललित कुमार सोगानी, अध्यक्ष श्री एस.एन. सिंघल, सचिव श्री कमल शर्मा, श्री आर.के.एस. जोधा के कर कमलों द्वारा संस्था परिसर में आयोजित समारोह में किया गया।

❍10 मई 2014 को अभिभावक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य बच्चों के वार्षिक प्रगति पत्र

अभिभावकों को वितरित करना व ग्रीष्मकालीन अवकाश का गृहकार्य अभिनावकों को समझाना था विद्यालय के शिक्षकों ने अपनी अपनी कक्षाओं के बच्चों के अभिभावकों को बच्चों की प्रगति पत्र दिये।

❍15 मई 2014 को मीनू मनोविकास मंदिर इन्क्लूसिव स्कूल में वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में

आयुर्वेदिक चिकित्सालय से आये डॉ. अनन जोशी तथा अभिभावक श्री जितेन्द्र जैन मुख्य अतिथि तथा संस्था के सचिव श्री सागरमल कौशिक तथा मुख्य कार्यकारी श्रीमती क्षमा.आर. कौशिक उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के अन्त में नेशनल

वैम्पियनशीप रोलर स्केटिंग बरेली (यू.पी.) में जिन बच्चों पुरस्कार व मेडल प्राप्त किये उनको अतिथि द्वारा सम्मानित करके पुरस्कार वितरण किये गये।

❍16 मई 2014 को उम्मीद– दी रे होप डे–केयर सेन्टर, पुष्कर का प्रथम वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में स्पेन से आये समुद्रा तथा जिओन मुख्य अतिथि थे। संस्था की मुख्य कार्यकारी श्रीमती क्षमा.आर.कौशिक ने मुख्य अतिथि तथा अभिभावकों एवं बच्चों का स्वागत किया गया।

❍19 जुलाई 2014 मीनू मनोविकास मन्दिर इन्क्लूसिव स्कूल में रमजान महोत्सव बड़ी धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया

गया। इस अवसर पर कनाडा से आये डावसन कॉलेज के 20 विद्यार्थीयो सहित स्कूल के लगभग 150 बच्चे उपस्थित थे।

❍8 अगस्त 2014 मीनू मनोविकास मन्दिर इन्क्लूसिव स्कूल में रक्षाबन्धन पर्व के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमे मुख्य अतिथि श्री सागर मल कौशिक थे जिन्होने सभी को राखी त्यौहार की जानकारी दी गई व महत्व बताया गया, जिसके अन्तर्गत सरकार द्वारा चलाये जा रहे अभियान "एक पेड़ एक जिन्दगी" से सम्बन्धित गतिविधियां करवाई गई।

अतिथि महोदय द्वारा खेजडी के वृक्ष पर बच्चों द्वारा बनाई गई

राखी बांधकर पेडो की सुरक्षा करने का संदेश दिया तथा सभी बच्चें परिसर में सभी पेड़ो को रक्षासूत्र बांधकर उस पेड़ की रक्षा करने की जिम्मेदारी ली गई।

❍15 अगस्त 2014 मीनू स्कूल चाचियावास में "68" वीं स्वतन्त्रता दिवस समारोह बड़ी धूम–धाम और हर्षोल्लास के साथ

मनाया गया, कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री जे.पी. चवरियाँ (अध्यक्ष बाल विकास समिति) विशिष्ट अतिथि श्री बहादुर माथुर थे एवं विद्यालय, संस्थागत स्टाफ गण उपस्थित थे।

❍19 अगस्त 2014 मीनू मनोविकास मन्दिर इन्क्लूसिव स्कूल में हर्षोल्लास के साथ कृष्ण जन्माष्टमी का त्यौहार मनाया गया, इस

गतिविधि के उदेद्श्य– धार्मिक पर्व की जानकारी, मनोरजनात्मक व सामाजिक विकास, सृजनात्मक कौशल का विकास, आपसी

सहयोग की भावना का विकास करना था। विद्यालय में लंच के पहले सभी कक्षाओं में सृजनात्मक गतिविधियाँ आयोजित की गई जिसमें बच्चों के द्वारा कृष्ण मुकुट, मोर पंख, बांसुरी सजाना, बांजू बंद तथा कृष्ण की फोटो को सजाना आदि कार्य किया गया।

❍26 व 27 अगस्त 2014 मीनू स्कूल चाचियावास द्वारा खुडियास मेले में जन जागरुकता प्रदर्शनी लगायी गई। इस प्रदर्शनी का उदेद्श्य समाज के लोगो को विकलांगता की जानकारी देना और विकलांग व्यक्ति के प्रति भेदभाव में कमी लाना एवं सम्मिलित शिक्षा के बारे में अवगत करना आदि रहा।

❍29.08.2014 को गणेश चतुर्थी बडी धूम– धाम से मनाया गया। इस दिन भगवान श्री गणेश का जन्मोत्सव मनाया जाता है विद्यालय

में विभिन्न कक्षाओं में इस अवसर पर झाँकियाँ सजाई गयी बच्चों ने अपने – अपने अध्यापक के साथ मिलकर अपनी कक्षाओं में झाकियाँ बनाई कोई गणेश बना तो, कोई भगवान शंकर कोई कार्तिकिय तो कोई नन्दी महाराज बच्चों में एक होड़ सी मची हुई थी। अपनी झाँकी को सुन्दर बनाने की, बच्चों ने वेस्ट मेटरियल का उपयोग कर अपने लिये मुखोटे, बाजूबन्द, फर्रिया तैयार की।

प्रतिष्ठा में, ____________ मुद्रित सामग्री | बुक पोस्ट

____

____

राजस्थान महिला कल्याण मण्डल संस्था
''विश्वामित्र आश्रम''
ग्राम – चाचियावास (जनाना अस्पताल से 4 किमी आगे),
पोस्ट – गगवाना, अजमेर, जिला–अजमेर (राज.) 305023
Email : rmkm_ajm@yahoo.com, rmkm.a@rediffmail.com
Ph.# : 0145-2794481, Fax : 0145-2794482, Mob.: 9829140992

सौजन्य : Vibha
मुद्रक : प्रगति प्रिन्टर्स, पुरानी मंडी, अजमेर